RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

अलाउद्दीन खिलजी के शासन की प्रशासनिक व भूराजस्व व्यवस्था

Sonu Kumari

Extension Lecturer (History), Government College Bond Kalan, Charkhi Dadri (India)

अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का सबसे सफल शासक माना जाता है।उसका दौर (1296-1316) खिलजी वंश का बेहतरीन दौर माना जाता है। उसने खुद को दूसरा सिकंदर घोषित किया हुआ था। वह विश्व विजेता बनने का स्वप्न देखता था। इसलिए उसने पहले सम्पूर्ण भारत को जीतने का प्रयत्न किया और इसमें हद तक सफल भी हुआ। अलाउद्दीन दक्षिण भारत तक जीत हासिल कर गोलकुंडा का प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर प्राप्त करने में संफल रहा । अलाउद्दीन का जन्म 1266 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम शहाबुद्दीन मासूद खिलजी था। बचपन में ही उसके पिता का देहांत हो गया था। वह उसके चाचा जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के पास पला बढ़ा था। उसका चाचा खिलजी वंश का प्रथम शासक था। खिलजी वंश की स्थापना जलालुद्दीन खिलजी ने 1290 ई. में की थी। उसने अलाउद्दीन को अमीरे-तुजक का पद दिया तथा कुछ समय बाद इलाहाबाद के निकट कड़ा मानिकपुर का सूबेदार नियुक्त कर दिया चूंकि अलाउद्दीन एक बेहतरीन तलवारबाज, घुड़सवार, संगठनकर्ता व नेतृत्वकर्ता था और उसने इसका परिचय भी दिया। सन 1292 ई. में अलाउद्दीन ने मालवा पर आक्रमण किया तथा भीलसा के किले पर कब्जा कर लिया और लूटमार कर अपार संपत्ति हासिल की, उसने सारा धन अपने चाचा सुल्तान के हवाले कर दिया। सुल्तान ने खुश होकर अलाउद्दीन को अवध का सूबेदार बना दिया। अब अलाउद्दीन सुल्तान बनने के बारे में सोचने लगा। उसने सुल्तान की अनुमति के बिना देवगिरि के शासक रामचंद्र देव यादव पर आक्रमण कर दिया तथा उसे हरा दिया और जीत स्वरूप अलाउद्दीन को अपार धनराशि प्राप्त हुई जिसमें सोना, चांदी, मोती, रतन जैसे मूल्यवान आभूषण व हजारों रेशमी कपड़े शामिल थे।

सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या :-

अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरी आक्रमण बैगर सुल्तान की अनुमति के किया था।। इसलिए उसने सुल्तान जलालुद्दीन को संदेश दिया कि वह क्षमा मांगना चाहता है तथा सारी संपत्ति देना चाहता है इसके लिए अलाउद्दीन ने सुल्तान को कड़ा मानिकपुर आने का आग्रह किया। सुल्तान अपने भतीजे से मिलने कड़ा मानिकपुर पहुंचा और जब वह अलाउद्दीन से गले मिलने लगा तो अलाउद्दीन के इशारे पर सुल्तान की हत्या कर दी गई। इस प्रकार 19 जुलाई 1296 को सुल्तान की हत्या के बाद अलाउद्दीन ने खुद को सुल्तान घोषित कर दिया। अलाउद्दीन ने बड़ी होशियारी से आरंभिक कठिनाइयों का सामना करते हुए और उन्हें दूर करते हुए दिल्ली में प्रवेश किया तथा 3 अक्टूबर 1296 को बलबन के लाल किले में अपना राज्य-अभिषेक करवाया।

सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) :-

यद्यपि अलाउद्दीन मानवीय भावनाओं की उपेक्षा कर व जघन्य हत्या के सहारे गद्दी पर बैठा था। लेकिन वह एक वीर साहसी और सफल संगठनकर्ता सिद्ध हुआ। अलाउद्दीन के समकालीन अमीर खुसरो और इसामी दोनों ने अलाउद्दीन को " एक भाग्यशाली व्यक्ति " कहा है। अलाउद्दीन विजय व प्रादेशिक विस्तार की निरन्तर इच्छा के बावजूद विवेकहीन प्रसारवाद के खतरों से परिचित था। वह प्रशासक के रूप में सल्तनतकाल के शासकों में बहुत ऊंचा स्थान रखता है । विधिवत शिक्षा न लेने के बावजूद केवल अनुभव के आधार पर शिक्षा प्राप्त करते हुए और मुल्लाओं के मूर्खतापूर्ण सिद्धांतों को त्याग कर अलाउद्दीन ने अपनी शक्ति मजबूत की। वह जानता था कि वह उन्हीं सिद्धांतों के आधार पर शासन कर सकता था जिनसे हिंदू जनता सहमति रखती हो। इसी कारण उसने बलबन की जातीय श्रेष्ठता वाली नीति का त्याग किया और योग्यता के आधार पर पदों का वितरण किया। उसने किसी धर्मयुद्धके बारे में नही सोचा और धार्मिक उद्देश्यों पर बल न देकर समयानुकुल व व्यवहारिक शासन व्यवस्था की विवेक पूर्ण ढंग से स्थापना की और प्रशासनिक व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त किया।

अलाउद्दीन खिलजी की प्रशासनिक व्यवस्था :-

अलाउद्दीन ने ना केवल अपने राज्य का विस्तार किया बल्कि उसने एक प्रभावशाली तंत्र भी प्रदान किया। उसने अपने शासन के दौरान होने वाले विद्रोहों का निराकरण करने के लिए कुछ आवश्यक कदम उठाए।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

1- **जागीरों को जब्त करना :-** अमीरों के पास धन अधिक होना विद्रोह का एक कारण था। सबसे पहले उसने कर माफ की गई भूमि पर कर लगाया और उन्हें कर देने के लिए मजबूर किया। अमीरों की संपत्ति को राज्य की संपत्ति घोषित कर दिया गया।

2- **शासन को उलेमाओं के हस्तक्षेप से मुक्त रखना :-** अमीर और उमेला यह दोनों ही सत्ता पर अंकुश लगाते थे। अलाउद्दीन ने दोनों ही वर्गों पर लगभग नियंत्रण करके इनको हस्तक्षेप नहीं करने दिया और स्वतंत्र रूप से शासन किया ।

3- **मंत्रियों की शक्ति पर अंकुश :-** अलाउद्दीन के समय उनके मंत्रियों की स्थिति सामान्य कर्मचारीयों जैसी थी। वह उनसे जरूरत के अनुसार सलाह लेता था परंतु मानने के लिए बाध्य नहीं था।

4- **मदिरापान पर** रोक :- सुल्तान ने मदिरापान पर रोक लगा दी थी। पहले कुछ अमीर सूबेदार व ताकतवर लोग इकट्ठे होकर मदिरापान करते व विद्रोह का षड्यंत्र बनाते थे।

5- **सामाजिक समारोहों पर प्रतिबंध**:- सुल्तान ने अमीरों के आपस में मिलने, दावत करने व वैवाहिक संबंधों पर प्रतिबंध लगा दिया ताकि सुल्तान के खिलाफ कोई योजना न बनाई जा सके।

6- **गुप्तचरों की नियुक्ति**:- सुल्तान ने अपने शासन में गुप्तचर व्यवस्था का गठन किया ताकि विद्रोही षडयंत्रों की सूचना मिल सके। अमीरों व पदाधिकारियों के घरों, दफ्तरों, नगरों तथा गांव में गुप्तचर नियुक्त कर दिए गए।

7- **हिंदुओं का दमन**:- अलाउद्दीन ने अपने शासन मे विद्रोह रोकने के लिए कुछ नियम बनाए जो हिंदुओं पर लागू होते थे:-

(i) हिन्दुओं के घोड़े पर बैठने पर रोक लगा दी।
(ii) हिन्दू शस्त्र नही रख सकते थे ।
(iii) हिन्दू अच्छे कपड़े नही पहन सकते थे ।
(iv) पशुओं व मवेशी रखने पर भी कर लगा दिए गए।
(v) जजिया कर को शक्ति से वसूला गया।

8- **दीवान-ए-इंशा**:- इस विभाग का मुख्य कार्य शाही घोषणाओं और यौजनाओं का प्रारूप तैयार करना व शासन के कार्यों का सही लेखा जोखा रखना तथा सरकारी आदेशों को सुरक्षित रखना था। इस विभाग का प्रमुख दबीर-ए-मुमालिक कहलाता था।

9- **दीवान-ए-आरिज:-** इस विभाग का मुखिया आरिज-ए-मुमालिक कहलाता था। उसका प्रमुख कार्य सेना में युवाओं की भर्ती करना, वेतन देना, सेना का निरीक्षण करना तथा युद्ध में सेनापति का सहयोग करना था।

10- **सैनिकों की हुलिया प्रथा:-** सुल्तान ने अपने सैनिकों का हुलिया लिखने की प्रथा आरंभ की ताकि उनकी सही पहचान हो सके।

11- **सैनिकों को नगद वेतन देना**:- अलाउद्दीन प्रथम सुल्तान था जिसने सैनिकों को नगद वेतन देना शुरू किया। सैनिकों का वार्षिक वेतन 234 टका होता था।

12- **दीवाने रसातल**:- यह विभाग पड़ोसी राजाओं को भेजे जाने वाले पत्रों का प्रारूप तैयार करता था। विदेश जाने वाले और विदेश से आने वाले प्रमुख व्यक्तियों व राजदूतों से संपर्क रखता था। इस तरह हम देखते हैं। अलाउद्दीन किस प्रकार अपने प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त रखने का प्रयास करता था।

13- **अलाउद्दीन खिलजी के समय भूराजस्व व्यवस्था**:- अलाउद्दीन प्रथम सुल्तान था जिसने भूमि की पैमाइश के आधार पर सर्वप्रथम भूमि कर लगाया था तथा भूराजस्व प्रणाली को सुधारने के लिए दीवाने , मुस्तखराज की स्थापना की जिसका प्रमुख कार्य किसानों से बकाया भूराजस्व का संग्रहण करना था।

कर प्रणाली

1- **खराज** अलाउद्दीन के काल में भू राजस्व दर सर्वाधिक थी। यह गंगा व यमुना के बीच का क्षेत्र दौआब में उपज का 50 प्रतिशत था । भूमि की पैमाइश के आधार पर सर्वप्रथम भूमि कर लगाया इसके लिए उसने बिस्वा को इकाई माना

2- **घरी कर:-** यह मकान पर लगाया गया कर था।

3. **चराई कर:-** यह कर दुधारू पशुओं को चराने का कर था। लेकिन दो जोड़ी बैल एक जोड़ी भैंस दो गाय व दस बकरियां कर से मुक्त थी।

4- **जकात**:- यह केवल मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था जो आय का 40 वां भाग था।

5- **खुम्स:-** मूल रूप से लूट के माल का 4/5 भाग सैनिकों को तथा शेष 1/5 राज्य को मिलता था। अलाउद्दीन ने इसका ठीक उल्टा कर दिया भविष्य में मोहम्मद बिन तुगलक ने भी इस प्रथा को जारी रखा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

6- **जजिया कर**:- यह गैर मुस्लिमों के से लिया जाने वाला धार्मिक कर था जो संभवत है ब्राह्मणों, स्त्रियों, बच्चों, पागलों और निर्बलओं से जजिया नहीं लिया जाता था।

7- **भूमि अनुदानों का अंत**:- अलाउद्दीन ने उन सभी भूमि अनुदानों को वापिस ले लिया जो अमीर वर्ग, शासकीय कर्मचारियों, विद्वानों और धर्म शास्त्रियों को राज्य द्वारा भेंट की गई थी।

8- **कर माफ की गई भूमि पर कर**:- अलाउद्दीन ने कर माफ भूमि पर दोबारा कर लगा दिया जो इस भूमि पर खेती करते थे लेकिन कर नहीं देते थे उन्हें कर देने के लिए बाध्य किया गया। इसके अलावा अलाउद्दीन ने कर उगाही में भ्रष्टाचार रोकने के लिए आमिल कारकुन पटवारियों व राजस्व सबसे संबंधित अधिकारियों के वेतन बढ़ा दिए। अलाउद्दीन ने मुक्ता प्रथा व खुती प्रथा भी समाप्त नही की उसने केवल भू- स्वामियों के विशेषाधिकार समाप्त कर दिए उनकी उद्दंडता कुचल डाली लेकिन इस कर प्रणाली से कृषक वर्ग संकट में आ गया पचास प्रतिशत भूमिकर, चराई कर, आवास कर देने के बाद उनका दैनिक जीवन यापन कठिन हो गया था।

अलाउद्दीन का मूल्यांकन: -

अलाउद्दीन के चरित्र तथा सफलताओं के संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है एलफिंस्टन के अनुसार उनका शासन काल गौरवपूर्ण था और अनेक कर एवं मूर्खतापूर्ण नियमों के बावजूद वह सफल शासक था इस प्रकार यह प्रतीत होता है कि वह एक कुशल प्रशासक एवं राजनीतिज्ञ था। प्रशासन व अन्य विभागों में व्यापक बदलाव करने वाला पहला मुसलमान शासक था उसने संपूर्ण भारत को राजनीतिक एकता प्रदान की तथा बाहरी मंगोल आक्रमणों का उसने सफलतापूर्वक मुकाबला किया तथा भूराजस्व, प्रशासन व आर्थिक मोर्चे पर विशेषज्ञ की तरह कार्य किया।

संदर्भ सूची

1. डॉक्टर यशवीर सिंह, मिस पुष्पा रानी, अनिल यादव: भारत का इतिहास 1200 ई. से 1707 ईसवी तक लक्ष्मी पब्लिकेशन भिवानी।
2. हरीश चंद्र वर्मा: मध्यकालीन भारत भाग्-1 (750 ई.-1540 ई.) हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. प्रोफेसर मनजीत सिंह सोढ़ी: भारत का इतिहास, मॉडर्न पब्लिकेशन, रेलवे रोड, जालंधर।
4. डॉ गोपाल प्रसाद, डॉक्टर जयपाल सिंह, दीपिका यादव: भारत का इतिहास 1200 ई.-1707 तक लक्ष्मी पब्लिकेशन, भिवानी।
5. भारत का इतिहास प्राचीन काल से 1526 ई. तक, दुरुस्त शिक्षा निदेशालय एमडीयू रोहतक।

RRIJM 2015, All Rights Reserved